

# जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण पर केंद्रित 17वां ज्ञान कार्यक्रम शुरू



महेंद्रगढ़ | हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हर्केवि) के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम की सोमवार को शुरुआत हो गई है। 31 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक पर केंद्रित ज्ञान कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 29 शोधकर्ता और विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं।

कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने संदेश में कहा कि ऊर्जा की खपत, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और संसाधनों उपयोग जैसे कारकों का मूल्यांकन करते हुए जीवन चक्र विश्लेषण जैव ईंधन की स्थिरता पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह पहल भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के साथ संरेखित होती है और स्थायी ऊर्जा समाधान के वैश्विक

दृष्टिकोण का समर्थन करती है। विवि के शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कहा कि 'ज्ञान' कार्यक्रम का उद्देश्य अकादमिक और उद्योग के बीच की खाई को समाप्त करना है। कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की। प्रो.

विकास बेनीवाल ने स्वागत भाषण देते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विवि की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता आस्ट्रिया के प्रो. गेरफ्रिड जंगमेयर ने अपने जीवन चक्र मूल्यांकन के अनुभव और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रतिभागियों को अवगत कराया। हर्केवि में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता ने जैव ईंधन अनुसंधान में जीवन चक्र विश्लेषण के एकीकरण के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि भारत का नवीकरणीय ऊर्जा भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम जैव ईंधन का कितना कुशलता से उपयोग कर सकते हैं और साथ ही उनके पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम कर सकते हैं। पाठ्यक्रम के समन्वयक प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि जैव ईंधन के स्थायी उत्पादन और उपयोग को सुनिश्चित करने में जीवन चक्र विश्लेषण की महत्वपूर्ण भूमिका है। आयोजन के उद्घाटन सत्र के अंत में प्रो. गुंजन गोयल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

# Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

## Public Relations Office

Newspaper: Dainik Chetna

Date: 28-01-2025

## जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण पर केंद्रित 17वां ज्ञान कार्यक्रम शुरू

महेन्द्रगढ़, चेतना संवाददाता। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेन्द्रगढ़ के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम की सोमवार को शुरुआत हुई। 31 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक' पर केंद्रित 'ज्ञान' कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 29 शोधकर्ता और विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने संदेश में कार्यक्रम आयोजन के लिए विभाग को शुभकामनाएँ दीं। कुलपति ने कहा कि ऊर्जा की खपत, ग्रीनहाउस



गैस उत्सर्जन और संसाधनों उपयोग जैसे कारकों का मूल्यांकन करते हुए जीवन चक्र विश्लेषण जैव ईंधन की स्थिरता पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह पहल भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के साथ संरेखित होती है और स्थायी ऊर्जा समाधान के वैश्विक दृष्टिकोण का समर्थन करती है। विश्वविद्यालय के शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कहा कि

'ज्ञान' कार्यक्रम का उद्देश्य अकादमिक और उद्योग के बीच की खाई को समाप्त करना है, जिससे ज्ञान साझा करने और कौशल विकास के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके। विश्वविद्यालय कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और

विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। तत्पश्चात प्रो. विकास बेनीवाल ने स्वागत भाषण देते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता आस्ट्रिया के प्रो. गेरफ्रिड जंगमेयर ने अपने जीवन चक्र मूल्यांकन के अनुभव और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रतिभागियों को अवगत कराया। हकेवि में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता ने अपने मुख्य संबोधन में जैव ईंधन अनुसंधान में जीवन चक्र विश्लेषण के एकीकरण के महत्व को रेखांकित किया।



# Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

## Public Relations Office

Newspaper: Gurgaon Today

Date: 28-01-2025

## हकेवि में जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण पर केंद्रित 17वां ज्ञान कार्यक्रम शुरू

सुरेंद्र चौधरी, गुड़गांव टुडे

नारनौल। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम की सोमवार को शुरुआत हुई। 31 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक' पर केंद्रित 'ज्ञान' कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 29 शोधकर्ता और विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने संदेश में कार्यक्रम आयोजन के लिए विभाग को शुभकामनाएँ दीं। कुलपति ने कहा कि ऊर्जा की खपत, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और संसाधनों उपयोग जैसे कारकों का मूल्यांकन करते हुए जीवन चक्र विश्लेषण जैव ईंधन की स्थिरता पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह पहल भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के साथ



संरिखित होती है और स्थायी ऊर्जा समाधान के वैश्विक दृष्टिकोण का समर्थन करती है। विश्वविद्यालय के शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कहा कि 'ज्ञान' कार्यक्रम का उद्देश्य अकादमिक और उद्योग के बीच की खाई को समाप्त करना है, जिससे ज्ञान साझा करने और कौशल विकास के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके।

विश्वविद्यालय कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। तत्पश्चात प्रो. विकास बेनीवाल ने स्वागत भाषण देते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता आस्ट्रिया के प्रो. गेरफ्रिड जंगमेयर ने अपने जीवन चक्र मूल्यांकन के अनुभव और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रतिभागियों को

अवगत कराया। हकेवि में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता ने अपने मुख्य संबोधन में जैव ईंधन अनुसंधान में जीवन चक्र विश्लेषण के एकीकरण के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि भारत का नवीकरणीय ऊर्जा भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम जैव ईंधन का कितना कुशलता से उपयोग कर सकते हैं और साथ ही उनके पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम कर सकते हैं। पाठ्यक्रम के समन्वयक प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि जैव ईंधन के स्थायी उत्पादन और उपयोग को सुनिश्चित करने में जीवन चक्र विश्लेषण की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। आयोजन के उद्घाटन सत्र के अंत में प्रो. गुंजन गोयल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित रहे।

# Central University of Haryana

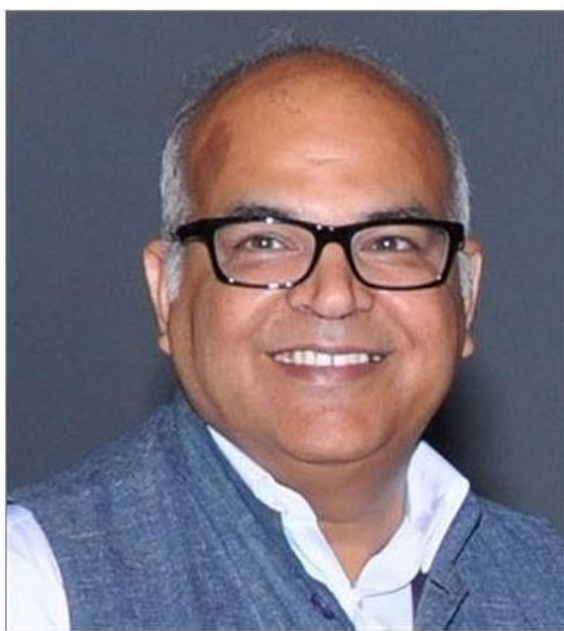
NAAC Accredited 'A' Grade University

## Public Relations Office

Newspaper: India News Calling

Date: 28-01-2025

### 17th GIAN course on life cycle analysis of biofuel started in CUH



**MAHENDERGARH, 27.01.25-**The Department of Microbiology, Central University of Haryana (CUH), Mahendergarh hosted the 17th Global Initiative on Academic Network (GIAN) program on "Tools and Techniques for Life Cycle Analysis of Biofuels" at CUH. This prestigious five-day workshop, scheduled from January 27 to January 31, 2025, brought together leading global experts, researchers, academicians, and students to explore innovative strategies for advancing biofuels through life cycle analysis (LCA) techniques, a critical tool for assessing the environmental impact of biofuels throughout their production and use.

Prof. Tankeshwar Kumar shared best wishes for the programme and stated that evaluating factors such as energy consumption, greenhouse gas emissions, and resource utilization, LCA provides a holistic perspective on the sustainability of biofuels. This initiative aligns with India's renewable energy goals and supports the global vision for sustainable energy solutions. Prof. Pawan Kumar Sharma, Dean research stated that the GIAN program aims to bridge the gap

between academia and industry by providing a platform for knowledge sharing and skill development. Prof. Suneel Kumar, Registrar also congratulated the department for organization of the programme.

The inaugural session commenced with the ceremonial lamp lighting and university's Kulgeet (anthem). This was followed by a heartfelt welcome address by Prof. Vikas Beniwal, who emphasized the university's commitment to empowering future scientists and researchers in the field of renewable energy. Prof. Surender Singh, the course coordinator provided an overview of the program, emphasizing the critical role of life cycle analysis in ensuring the sustainable production and utilization of biofuels. He highlighted the workshop's objective of equipping participants with the tools and knowledge needed to optimize biofuel production processes while addressing global environmental challenges.

The esteemed guest faculty, Prof. Gerfried Jungmeier, an internationally renowned expert in biofuels and sustainability from Austria. His expertise in life cycle assessment and his global perspective on the biofuels industry added immense value to the program. The Chief Guest, Prof. Dinesh Kumar Gupta, Dean of the School of Interdisciplinary and Applied Sciences (SIAS) at CUH, in his keynote address, underscored the importance of integrating life cycle analysis into biofuel research. He addressed that India's renewable energy future depends on how efficiently we can utilize biofuels while minimizing their environmental impact. Programs like GIAN provide a platform to explore sustainable solutions and develop skilled professionals in this critical area.

The session concluded with a formal felicitation of the guests, followed by a vote of thanks delivered by Prof. Gunjan Goel, who acknowledged the contributions of the dignitaries, faculty, participants, IIT, Hyderabad and Ministry of Education. On this occasion HoDs, faculty members and students from various departments were also present.



## हकेंवि में जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण पर केंद्रित 17वां ज्ञान कार्यक्रम शुरू

महेंद्रगढ़, महेश गुप्ता (पंजाब केसरी): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम की सोमवार को शुरुआत हुई। 31 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक' पर केंद्रित 'ज्ञान' कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 29 शोधकर्ता और विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने संदेश में कार्यक्रम आयोजन के लिए विभाग को शुभकामनाएं दी। कुलपति ने कहा कि ऊर्जा की खपत, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और संसाधनों उपयोग जैसे कारकों का मूल्यांकन करते हुए जीवन चक्र विश्लेषण जैव ईंधन की स्थिरता पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह पहल भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के साथ सरिखत होती है और स्थायी ऊर्जा समाधान के वैश्विक दृष्टिकोण का समर्थन करती है। विश्वविद्यालय के शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा

ने कहा कि 'ज्ञान' कार्यक्रम का उद्देश्य अकादमिक और उद्योग के बीच की खाई को समाप्त करना है, जिससे ज्ञान साझा करने और कौशल विकास के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके। विश्वविद्यालय कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। तत्पश्चात प्रो. विकास बेनीवाल ने स्वागत भाषण देते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता आस्ट्रिया के प्रो. गेरफ्रिड जंगमेयर ने अपने जीवन चक्र मूल्यांकन के अनुभव और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रतिभागियों को अवगत कराया। हकेंवि में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डॉन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता ने अपने मुख्य संबोधन में जैव ईंधन अनुसंधान में जीवन चक्र विश्लेषण के एकीकरण के महत्व को रेखांकित किया।



# Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

## Public Relations Office

Newspaper: Aaj Samaj

Date: 03-02-2025

हकेवि में जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण पर केंद्रित 17वें ज्ञान कार्यक्रम का हुआ समापन

## विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 27 शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की

### नीरज कौशिक

महेंद्रगढ़। हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा आयोजित 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम का समापन हो गया। जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक पर केंद्रित इस पाँच दिवसीय ह्यज्ञान कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 27 शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की और ऊर्जा स्रोत के रूप में बायोप्यूल्स की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय के कुलपति ने कार्यशाला के सफल आयोजन पर हर्ष व्यक्त करते हुए बायोएनर्जी में शोध



ज्ञान कार्यक्रम के समापन सत्र में उपस्थित कुलपति, शिक्षक एवं प्रतिभागी।

आधारित समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आयोजन समिति की सराहना की और कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक बनाने के लिए उनकी मेहनत की प्रशंसा की। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार व शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने

कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई दी। विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता भी आयोजन की सराहना करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी

वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कोर्स समन्वयक की भूमिका निभाई। साथ ही प्रो. विकास बेनीवाल, प्रो. गुंजन गोयल, डॉ. जितेंद्र कुमार सैनी, डॉ. पूजा यादव, डॉ. अविजीत

प्रामाणिक और डॉ. विनोद यादव ने आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में सक्रिय भागीदारी की। प्रो. सुरेंद्र सिंह बताते हैं कि इस कार्यशाला में वैश्व स्तर के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए।

इसमें डॉ. गरिंठ जूंगमाहवर ने बायोप्यूल्स की वैश्विक स्थिति और बायोमास से एथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया पर चर्चा की। उन्होंने बायोएनर्जी क्षेत्र में संभावनाओं और चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने भविष्य में हकेवि के साथ सहयोग की संभावनाएं तलाशने पर जोर दिया। इसी क्रम में सीएसआईआर-आईआईपी के डॉ. जसविंदर सिंह और आईसीजीईबी, नई दिल्ली के डॉ. शिरोष श्रीवास्तव जैसे ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों ने भी अपने विचारों से प्रतिभागियों को लाभांशित

किया। डॉ. जितेंद्र कुमार सैनी ने लिग्नोसेलुलॉसिक बायोरिफाइनरी में अवरोधकों को कम करने के विभिन्न पहलुओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया। प्रो. विकास बेनीवाल ने सेल्युलोज एंजाइमों के आकलन पर केंद्रित व्याख्यान दिया। कार्यशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण के दौरान बायोप्यूल्स के जीवन चक्र विश्लेषण में उपयोग किए जाने वाले सॉफ्टवेयर और डेटाबेस की जानकारी से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त समूह कार्य एवं परीक्षा के माध्यम से प्रतिभागियों की सीखने की क्षमता और सामूहिक समस्या समाधान कौशल का मूल्यांकन किया गया। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. जितेंद्र सैनी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आयोजन

हर्केवि में 17 वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन अकादमी नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम का समापन हुआ

## बायो एनर्जी में शोध आधारित समाधान पर जोर

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हर्केवि) के माइक्रो बायोलॉजी विभाग की ओर से आयोजित 17 वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन अकादमी नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम का समापन हो गया। 27 शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। ऊर्जा स्रोत के रूप में बायोफ्यूल की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने बायो एनर्जी में शोध आधारित समाधानों पर जोर दिया। विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता भी आयोजन की सराहना करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की



कार्यक्रम के समापन सत्र में उपस्थित कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार और अन्य। स्रोत: हर्केवि

प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कोर्स समन्वयक की भूमिका निभाई।

प्रो. विकास बेनीवाल, प्रो. गुंजन

गोयल, डॉ. जितेंद्र कुमार सैनी, डॉ. पूजा यादव, डॉ. अविजित प्रामाणिक और डॉ. विनोद यादव ने आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में सक्रिय भागीदारी की। प्रो.

सुरेंद्र सिंह ने बताया कि इस कार्यशाला में डॉ. गरुड जुंगमाइयर ने बायोफ्यूल्स की वैश्विक स्थिति और बायोमास से एथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया पर चर्चा की।

सीएसआईआर-आईआईपी के डॉ. जसविंद्र सिंह और आईसीजीईवी नई दिल्ली के डॉ. शरीष श्रीवास्तव आदि ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. जितेंद्र ने लिग्नोसेलुलॉसिक बायो रिफाइनरी में अवरोधकों को कम करने के विभिन्न पहलुओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया। प्रो. विकास ने सेल्यूलोज एंजाइमों के आकलन पर केंद्रित व्याख्यान दिया। कार्यशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण के दौरान बायोफ्यूल के जीवन चक्र विश्लेषण में उपयोग किए जाने वाले सॉफ्टवेयर और डेटाबेस की जानकारी से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया।



## जैव ईंधन के जीवन चक्र पर केंद्रित ज्ञान कार्यक्रम का समापन

संवाद सहयोगी, जागरण •  
महेंद्रगढ़: हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हर्केवि), महेंद्रगढ़ के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा आयोजित 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव आन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम का समापन हो गया। 'जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक' पर केंद्रित इस पांच दिवसीय 'ज्ञान' कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 27 शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की और ऊर्जा स्रोत के रूप में बायोप्यूल्स की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कार्यशाला के सफल आयोजन पर हर्ष व्यक्त करते हुए बायोएनर्जी में शोध आधारित समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने

- 27 शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने विषय पर विचार-विमर्श किया
- कुलपति ने शोध आधारित समाधानों को आवश्यक बताया



ज्ञान कार्यक्रम के समापन सत्र में उपस्थित कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार शिक्षक एवं प्रतिभागी • सोजन्य: हर्केवि

आयोजन समिति की सराहना की और कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक बनाने के लिए उनकी मेहनत की प्रशंसा

की। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार व शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के

सफल आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई दी।

विश्वविद्यालय में स्कूल आफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता भी आयोजन की सराहना करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कोर्स समन्वयक की भूमिका निभाई। साथ ही प्रो. विकास बेनीवाल, प्रो. गुंजन गोयल, डा. जितेंद्र कुमार सैनी, डा. पूजा यादव, डा. अविजीत प्रामाणिक और डा. विनोद यादव ने आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में सक्रिय भागीदारी की। प्रो. सुरेंद्र सिंह बताया कि इस कार्यशाला में वैश्विक स्तर के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। इसमें डा. गर्फिंड

जुंगमाइयर ने बायोप्यूल्स की वैश्विक स्थिति और बायोमास से एथेनाल उत्पादन की प्रक्रिया पर चर्चा की। उन्होंने बायोएनर्जी क्षेत्र में संभावनाओं और चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने भविष्य में हर्केवि के साथ सहयोग की संभावनाएं तलाशने पर जोर दिया। कार्यशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण के दौरान बायोप्यूल्स के जीवन चक्र विश्लेषण में उपयोग किए जाने वाले साफ्टवेयर और डेटाबेस की जानकारी से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त समूह कार्य एवं परीक्षा के माध्यम से प्रतिभागियों की सीखने की क्षमता और सामूहिक समस्या समाधान कौशल का मूल्यांकन किया गया। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम के अंत में डा. जितेंद्र सैनी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।



## जैव ईंधन के जीवन चक्र का किया विश्लेषण

■ केंद्रीय विश्वविद्यालय में 17वां ज्ञान कार्यक्रम संपन्न

हरिभूमि न्यूज ► महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा आयोजित 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव आन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम का समापन हो गया। जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक पर केंद्रित इस पांच दिवसीय ज्ञान कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 27 शोधकर्तारों और विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की और ऊर्जा स्रोत के रूप में बायोफ्यूल की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। समापन



महेंद्रगढ़। प्रतिभागियों को सम्मानित करते कुलपति एवं अन्य। फोटो: हरिभूमि

सत्र में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने बायोएनर्जी में शोध आधारित समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आयोजन समिति की सराहना की और कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक बनाने

के लिए उनकी मेहनत की प्रशंसा की। कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार व शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई दी।

### शोध का महत्व बताया

विश्वविद्यालय में स्कूल आफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता भी आयोजन की सराहना करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्तारों को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कोर्स समन्वयक की भूमिका निभाई। प्रो. विकास बेगीवाल, प्रो. गुंजन गोयल, डॉ. जितेंद्र कुमार सेनो, डॉ. पूजा यादव, डॉ. अविजीत प्रामाणिक और डॉ. विनोद यादव ने आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में सक्रिय भागीदारी की। प्रो. सुरेंद्र सिंह बताया कि इस कार्यशाला में वैश्विक स्तर के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए।

## हकेवि में जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण पर केंद्रित 17वें ज्ञान कार्यक्रम का हुआ समापन

कार्यशाला में वैश्विक विशेषज्ञों ने बायोप्यूल्स, बायोमास से एथेनॉल उत्पादन और बायोएनर्जी क्षेत्र की चुनौतियों पर चर्चा की

महेंद्रगढ़, 2 फरवरी (ब्यूरो) : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा आयोजित 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम का समापन हो गया। 'जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक' पर केंद्रित इस पाँच दिवसीय 'ज्ञान' कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 27 शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की और ऊर्जा स्रोत के रूप में बायोप्यूल्स की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कार्यशाला के सफल आयोजन पर हर्ष व्यक्त करते हुए बायोएनर्जी में शोध आधारित समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आयोजन समिति की सराहना की और कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक बनाने के लिए उनकी



ज्ञान कार्यक्रम के समापन सत्र में उपस्थित कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार, शिक्षक एवं प्रतिभागी।

मेहनत की प्रशंसा की। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार व शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई दी।

विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्टाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता भी आयोजन की सराहना करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कोर्स समन्वयक

की भूमिका निभाई। साथ ही प्रो. विकास बेनीवाल, प्रो. गुंजन गोयल, डॉ. जितेंद्र कुमार सैनी, डॉ. पूजा यादव, डॉ. अविजीत प्रामाणिक और डॉ. विनोद यादव ने आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में सक्रिय भागीदारी की। प्रो. सुरेंद्र सिंह बताया कि इस कार्यशाला में वैश्विक स्तर के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। इसमें डा. गफिरुड जुगमाइयर ने बायोप्यूल्स की वैश्विक स्थिति और बायोमास से एथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया पर चर्चा की। उन्होंने बायोएनर्जी क्षेत्र में संभावनाओं और

चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने भविष्य में हकेवि के साथ सहयोग की संभावनाएं तलाशने पर जोर दिया।

इसी क्रम में सीएसआईआर-आईआईपी के डॉ. जसविंदर सिंह और आईसीजीईबी, नई दिल्ली के डा. शिरीष श्रीवास्तव जैसे ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों ने भी अपने विचारों से प्रतिभागियों को लाभांशित किया। डॉ. जितेंद्र कुमार सैनी ने लिग्नोसेलुलॉसिक बायोरिफाइनरी में अवरोधकों को कम करने के विभिन्न पहलुओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया। प्रो. विकास बेनीवाल ने सेल्युलेज एंजाइमों

के आकलन पर केंद्रित व्याख्यान दिया।

कार्यशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण के दौरान बायोप्यूल्स के जीवन चक्र विश्लेषण में उपयोग किए जाने वाले सॉफ्टवेयर और डेटाबेस की जानकारी से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त समूह कार्य एवं परीक्षा के माध्यम से प्रतिभागियों की सीखने की क्षमता और सामूहिक समस्या समाधान कौशल का मूल्यांकन किया गया। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए।



# Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Punjab Kesari

Date: 03-02-2025

## बायोफ्यूल पर छात्रों और स्कोलर ने किया विचार



नारनौल, महेश गुप्ता (पंजाब केसरी): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा आयोजित 17वें ग्लोबल इनिशिएटिव ऑन एकेडमिक नेटवर्क (ज्ञान) कार्यक्रम का समापन हो गया। 'जैव ईंधन के जीवन चक्र विश्लेषण के उपकरण और तकनीक' पर केंद्रित इस पाँच दिवसीय 'ज्ञान' कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 27 शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की और ऊर्जा स्रोत के रूप में बायोफ्यूल की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कार्यशाला के सफल आयोजन पर

हर्ष व्यक्त करते हुए बायोएनर्जी में शोध आधारित समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार व शोध अधिष्ठाता प्रो. पवन कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई दी। विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन, प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता भी आयोजन की सराहना करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भावी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रो. सुरेंद्र सिंह ने कोर्स समन्वयक की भूमिका निभाई।

**पंजाब केसरी**  
www.punjabkesari.com

Mon, 03 February 2025  
<https://mpaper.punjabkesari.com>

